महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
ज्ञान शांति मैत्री
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252551

हिंदी विवि में शोध प्रविधि एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग पर कार्यशाला में वक्ताओं ने रखे विचार

सत्य की खोज के लिए मानविय कारण ही प्रभावी- प्रो. के. के. दीक्षित

वर्धा दि. 17 अक्तूबर 2011:

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र की ओर से आयोजित सात दिवसीय शोध प्रविधि एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग पर कार्यशाला में शुक्रवार यशवंत महाविद्यालय सेलु (वर्धा) के अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष प्रो. के. के. दीक्षित ने शोध की गणना किस प्रकार से की जाएगी इसपर अपनी बात रखी। उन्होंने पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से जानकारी देते हुए कहा कि गणितीय गणना हमेशा ही सत्य को प्रतिबिंबित नहीं करती और सत्य के लिए मानविय कारण की सबसे प्रभावी माने जाते है।

कार्यशाला के तीसरे दिन प्रथम सत्र में इंटरनेशनल मीडिया इंस्टिटयूट गुड़गाव के चेयरमैन प्रो. जे. एस. यादव ने कहा कि अपने विचारों को शोध पर थोपने के बजाय विषय के अनुरूप शोध को व्यवस्थित, वैज्ञानिक, उद्देश्यपरक व तुलनात्मक रखना चाहिए। उन्होंने शोध के संरचनात्मक एवं गुणात्मक पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उनका मानना था कि शोध के परिणामों को किसी एक आधार पर नहीं अपतिु संख्यात्मक व गुणात्मक आधार पर निकालना चाहिए।

साउथ एशिया पार्टनरशिप सर्वे रिसर्च एंड ट्रेनिंग सेंटर, नई दिल्ली के मुख्य सलाहकार डॉ. बी आर पाटील ने रिसर्च की प्रक्रिया पर प्रकाश ड़ाला। उन्होंने 'तमसोमां ज्योतिर्गमय' का जिक्र करते रिसर्च को अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाने वाले प्रक्रिया बताया। उन्होंने शोम देव मूनि द्वारा लिखित नीति व्याख्यानम पुस्तक से रिसर्च को जोड़ते हुए बताया कि रिसर्च में वास्तविकता जानने की जरूरत है क्योंकि वास्तविकता जाने के बाद ही हम समस्या और उसके निवारण में संबंध स्थापित कर सकेंगे। शोध प्रश्न से शुरू होकर उत्तर पर खत्म होता है और इस प्रक्रिया में अनुभव की भी आवश्यकता है।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी